मरूमेघ
किसान ई – पत्रिका
www.marumegh.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
©2019 marumegh
ISSN:2456-2904

जौ उत्पादन एवं इससे सम्बंधित सलाह

करन छाबड़ा, महेंद्र बेले
चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार, हरियाणा –125004

जलवायु

जौ एक खाधान्न एवं औद्योगिक फसल हैं । कृषि जलवायु की कठिन परिस्तिथियों में भी इसे सफलता पूर्वक उगाया जा सकता हैं । बोते समय इसे नम, बढवार के समय ठंडी और फसल पकने के समय सुखा तथा अधिक तापमान व शुष्क वातावरण की आवश्यकता होती हैं । बीजाई के समय अनुकूल तापमान 25–30 डिग्री सेंटीग्रेट उपयुक्त मन जाता हैं । फसल वृद्धि के समय 12 से 15 डिग्री सेल्सीयस औसत तापमान की आवश्यकता होती हैं । अच्छे जल निकास वाली दोमट मिट्टी में जौ की फसल अच्छी होती हैं । रेतीली और कमजोर जमीन में भी यह सफलतापूर्वक उगाया जा सकता हैं । बारानी इलाको में थोड़ी–सी वर्षा से भी जौ की फसल अच्छी हो जाती हैं ।

हरियाणा में इसे मुखयतः रबी मौसम में उस भूमि में उगाया जाता है जहां सिंचाई की सुविधा ठीक से उपलब्ध नहीं होती । हरियाणा के पश्चिमी क्षेत्र सिरसा, हिसार , भिवानी , महेंद्रगढ़, रेवाडी, जींद, रोहतक व गुडगाँव जिलो में जहाँ जलवायु कुछ खुश्क है तथा वार्षिक वर्षा 500 मि. मी. से कम हैं । इस क्षेत्र की मिट्टी हल्की दोमट है तथा सिंचाई सुविधाओ की भी कमी के कारण इस क्षेत्र में जौ की फसल उगे जाती हैं ।

किस्में

1. बी एच 75	2. बी एच 393
समस्त हरियाणा में सिंचित दशा में समय की बिजाई के लिए उपयुक्त	पछेती बूआई करने पर दानों में माल्ट की मात्रा कम हो जाती हैं
बौनी, छः कतारी	दानें हल्के पीले रंग के तथा मध्यम आकार के एवं छिलका पतला
अधिक फुटाव वाली, मध्यमढीली बालें तथा अगेती पकाई	अगेती पकाई तथा माल्ट के लिए अति उत्तम
दाने हल्के पीले मध्यम आकर के	मोल्या, पीला व भूरा रतुआ अवरोधी तथा चेपा के प्रति सहनशील
पिला रतुआ तथा मोल्या रोग सहनशील व न गिरने वाली किस्म	पकने का समय 122 दिन
औसत पैदावार 10–16 क्विंटलध एकड़	माल्ट की प्रतिशत 90
	औसत पैदावार 19 क्विंटल एकड़

3.बी एच 902	4.बी एच 885
मोटे गोल दानें	बौनी दो कतारी, अधिक फुटाव
पीला रतुआ तथा पत्तो की झुलसा रोगरोधी व न गिरने वाली किस्म	मोटे हल्के–पीले गोल दानें, दानों पर महीन छिलका माल्टिंग के लिए उत्तम
पकने का समय 129 दिन	पीला रतुआ तथा पत्तो की झुलसा रोगरोधी व न गिरने वाली किस्म
औसत पैदावार 20 क्विंटल एकड	औसत पैदावार 20 क्विंटल एकड
5.बी एच 946	
अर्ध बौनी छः पंक्ति वाली किस्म मध्यम अवधि में पकने वाली किस्म औसत पैदावार 21 क्विंटल एकड़	

बीजाई का समय	बीजाई का तरीका
• बारानी क्षेत्रों में जौ की बीजाई अक्टूबर माह के दुसरे पखवाड़े में शुरू कर दें ।	जौ की बीजाई बीज उर्वरक ड्रिल से करें ।
• सिंचित क्षेत्रों में समय की बीजाई 15 से 30 नवम्बर के बीच कर लें ।	यदि भूमि में पर्याप्त नमी हो तो फसल को केरा प्रणाली से बोएं ।
• बी एच 885 किस्म की बीजाई 10–25 नवम्बर के बीच कर लें ।	बारानी क्षेत्रों में जहां पर भूमि की उपरी सतह में नमी की कमी होती है वहां पोरा प्रणाली से बीजाई करें ।
• दिसम्बर माह में बोई फसल पछेती मानी जाती हैं । पछेती बोई गई फसल में माल्ट की पैदावार वगुणवत्ता मेंक कमी हों जाती हैं ।	ठीक समय पर बोई गई फसल के लिए दो खुडो की दुरी 22 से.मी. तथा देर से बोई जाने वाली और बारानी क्षेत्रों में 18–20 से.मी. के अंतर से बहुत अच्छे परिणाम निकलते हैं ।
	बी एच 885 किस्म के खुड से खुड की दुरी 18 से.मी. होनी चाहिए ।

बीज उपचार

दीमक की रोकथाम के लिए 100 किलोग्राम जौ के बीज को 600 मि.ली. क्लोरोपाइरीफास 20 ई.सी. से उपचारित करें । इस कीटनाशक को पानी में मिलाकर 12.5 लीटर घोल बनालें । फिर बीज को एकसार फर्श पर बीछा दें और यह घोल ऊपर से छिड़क दें । बीज को हिला दें ताकि यह घोल सब बीजो को लग सके । उपचारित बीज को रत भर सूखने के बाद ही बोयें ।

खुली कान्गियारी (लूस स्मट) से बचाव के लिए बीजोपचार : विटावैकस या बाविस्टिन 2 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से सुखा उपचार कर बीजाई करें ।

बीज की मात्रा प्रति एकड़

•छः कतार वाली किस्मों की अच्छी पैदावर के लिए सिंचित स्तियिो में 35 किलोग्राम बीज प्रति एकड़ डालें ।

•पछेती बीजाई में 45 किलोग्राम बीज प्रति एकड़ प्रयोग करें ।

•बारानी स्तिथियो में 30 किलोग्राम बीज प्रति एकड़ प्रयोग करें ।

•दो कतार वाली बी एच 885 की बीजाई के लिए 40 किलोग्राम प्रति एकड़ बीज का प्रयोग करें ।

खरपतवार नियंत्रण

- पहली सिंचाई के बाद एक या दो बार फसल की नलाई करें ।यदि ऐसा न कर सके हों तो 200–500 लीटर पानी में 400 ग्राम 2,4 डी (सोडियम साल्ट) को घोलकर फसल की बीजाई के 40 दिन बाद प्रति एकड़ देने से चौड़ी पत्ती वाले घास नष्ट हो जाते हैं । यह फसल को कोई क्षति नहीं पहुंचाता ।
- घास कुल के खरपतवारो (कनकी, जंगली जई व लोमड़ घास) के नियंत्रण हेतु एक्सियल 5 ई.सी. (पिनोक्साडेन) 400 मि.ली. प्रति एकड़ को 200 लीटर पानी में घोल कर बीजाई के 40–45 दिन बाद छिडकाव करें ।

खाद की मात्रा (मिट्टी परिक्षण के आधार पर खाद दें)

सिंचित क्षेत्र के लिए

दो कतार वाली बी एच 885 किस्म के लिए

- नाइट्रोजन 32 किलोग्राम/ एकड {यूरिया (46:) 70 किलोग्राम/एकड़}
- फास्फोरस 16 किलोग्राम/ एकड{सिंगल सुपर फास्फेट (16:) 100 किलोग्राम/एकड़}
- पोटाश 8 किलोग्राम/ एकड. {म्यूरेट ऑफ पोटाश (60:) 13 किओलोग्राम/एकड़}

अन्य छः कतार वाली किस्मो के लिए

- नाइट्रोजन 24 किलोग्राम/ एकड़ {यूरिया (46:) 52 किलोग्राम/एकड़}
- फास्फोरस 12 किलोग्राम/एकड़ {सिंगल सुपर फास्फेट (16:) 75 किलोग्राम/एकड़}
- पोटाश 6 किलोग्राम/एकड़ {म्यूरेट ऑफ पोटाश (60:) 10 किओलोग्राम/एकड़}

असिंचित क्षेत्र के लिए

- नाइट्रोजन 12 किलोग्राम/ एकड़ {यूरिया (46:) 26 किलोग्राम/एकड़}
- फास्फोरस 6 किलोग्राम/एकड़ {सिंगल सुपर फास्फेट (16:) 40 किलोग्राम/एकड़}

नोटःसिंचित क्षेत्रों में फास्फोरस, पोटाश तथा आधी नाइट्रोजन की मात्रा बीजाई के समय डालें और बची हुई नाइट्रोजन पहली सिंचाई के बाद **डालें ।** असिंचित क्षेत्रों में नाइट्रोजन व फास्फोरस खाद की सारी मात्रा बीजाई के समय डालें ।

भूमि में यदि जस्ते की कमी है, डी.टी.पी.ए. निषकर्षणीय जस्ता 0.35 पी.पी.एम. से कम है, तब 10–20 किलोग्राम जिंक सलफेट प्रति एकड़ कपास या जौ की बीजाई से पहले आखिरी जुताई पर खेत में बिखेर कर मिट्टी में मिला दें । खड़ी फसल में जस्ते की कमी के लक्षण प्रकट होने पर 0.5: जिंक सलफेट व 2.5: यूरिया का घोल बनाकर 15–15 दिन के अंतर पर दो स्प्रे करें ।

सिंचाई प्रबंधन

- सिंचाई क्षेत्रों में जौ की अच्छी फसल उगाने के लिए सिंचाई की संख्या वर्षा के उपर निर्भर करती हैं ।
- दक्षिणी–पूर्वी खुश्क जिलो में बीजाई के बाद साधारणतया 2 सिंचाईयो की आवश्यकता पड़ती है । पहली सिंचाई के 40–45 दिन बाद और दूसरी सिंचाई 80 से 85 दिन बाद करें ।

किट प्रबंधन

दीमक

- बीजाई के समय दीमक के उपचार के लिए 100 किलोग्राम जौ के बीज को 600 मि.ली क्लोरोपाइरीफॉस 20 ई.सी. से उपचारित करें ।

सतही टिड्डा

- साधारणतया इसे टोका कहते हैं । यह अंकुरित जौ के लिए बहुत ही हानिकारक होता है तथा पौधों को जमींन के पास से काटता है ।
- 10 किलोग्राम मिथाइलपेराथिओंन 2: घुड़ा प्रति एकड़ के हिसाब से घुड़ें ।

चेपा व तेला

ये कीड़े फरवरी–मार्च में जौ की पत्तियों और बालियों से रस चूसते हैं । 12: बालियां या सबसे ऊपर के पत्ते पर चेपा के समूह (एक समुह में 10 कीट तक हों) मिलें तो कीटनाशक का छिडकाव कीजिए ।

•400 मि.लि. मेलथिओन 50 ई.सी. को 250 लीटर पानी में मिलाकर प्रति एकड़ फसल पर छिडकें ।

रोग प्रबंधन

खुली कांगियारी (लूस स्मट)

- विटावैक्स या बाविस्टिन 2 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से सुखा उपचार करें ।

काला रतुआ एवं भूरा या पत्तो का रतुआ

- 800 ग्राम जिनेब (डायथेन जेड–78) या मेन्कोजेब (डायथेन एम–45) को 250 लीटर पानी में मिलाकर छिडके । पहला छिड़काव तब करें जब कहीं–कहीं बीमारी नजर आये । बाद में 10 से 15 दिन के अंतर से 2 या 3 छिड़काव और करें ।

धारियों वाला रोग

- **डायथेन एम–45 (इंडोफिल एम–45)**600 ग्राम प्रति एकड़ के हिसाब से करें तथा 10 से 15 दिन के अन्तराल पर छिड़काव करें ।

मोल्या रोग

- रोगरोधी किस्म बी एच 75 व बी एच 393 की बीजाई करें ।
- मई एवं जून के महीनो में खेत की 10–15 दिन के अन्तराल पर 2–3 गहरी जुतईयां करें । सूत्रक्रमी की संख्या कम करने के लिए 13 किलोग्राम कार्बोफ्युरान (फ्यूराडान 3 जी) दवाई प्रति एकड़ के हिसाब से बीजाई के समय देने वाली खादों में मिला कर पोरें व बीजाई करें ।

कटाई–गहाई

फसल कि कटाई के लिए बढ़िया किस्म की दरातियो का प्रयोग करें । यदि हो सके तो ट्रेक्टर–चालित यन्त्र का प्रयोग करें । फसल की गहाई के लिए शक्ति चालित गहाई मशीन 'थ्रेशर' का प्रयोग करें । अब ट्रेक्टर द्वारा चालित या स्वचालित ऐसे कम्बाईन–हार्वेस्टर भी उपलब्ध हैं जो कटाई और गहाई साथ–साथ करते हैं ।